

स्वर्गीय पं० जवाहर लालजी कृत ।

सम्मेदाचल पूजा

माहात्म्य सहित ।

प्रकाशक—मूलचंद्र गुप्त ।

मालिक—जैनग्रंथ प्रभाकर कार्यालय, श्यामबाजार कलकत्ता ।

मुद्रक—श्रीलालजैन, जैन सिद्धांतप्रकाशक (पवित्र) प्रेस
८ महेंद्रबोसलेन श्यामबाजार कलकत्ता ।

न्योछावर ।)

टोंकन पर अर्घ चढ़ानेका पाठ इन कोठों में देखकर निकालिये।

नंबर	मोक्ष भए तीर्थंकरों और कूटोंके नाम		पत्रांक	नंबर	मोक्ष भए तीर्थंकर और कूटोंके नाम		पत्रांक
१	चौबीस गणधरों के प्रथम टोंक		२१	१४	संभवनाथ	धवलदत्त	७
२	कुंथुनाथ	ज्ञानधर	१३	१५	वासुपूज्य	मंदारगिरि	२१
३	नमिनाथ	मित्रधर	१९	१६	अभिनंदननाथ	आनन्द	७
४	अरनाथ	नाटक	१३	१७	जल मंदिर	जलमंदिर	०
५	मल्लिनाथ	संबल	१४	१८	धर्मनाथ	सुदत्त	१२
६	श्रेयांसनाथ	संकुल	१०	१९	सुमतिनाथ	अविचल	८
७	पुष्पदंत	सुप्रभ	६	२०	शांतिनाथ	शांतिप्रभ	१२
८	पद्मप्रभ	मोहन	८	२१	महावीर	पावापुर	२१
९	मुनिसुव्रत	निर्जर	१५	२२	सुपार्श्वनाथ	प्रभास	६
१०	चंद्रप्रभ	ललित	२	२३	विमलनाथ	सुवीरकुल	१०
११	आदिनाथ	सर्वसिद्धिवरकूट	२१	२४	अजितनाथ	सिद्धवर	३
१२	शीतलनाथ	विद्युत	६	२५	नेमिनाथ	उर्जयंतकूट	२१
१३	अनंतनाथ	स्वयंभू	११	२६	पार्श्वनाथ	सुवरणभद्र	१९

श्रीसम्मेदाचलमाहात्म्य ।

दोहा ।

स्वयंसिद्ध परमातमा, सहज सिद्ध हैं सार ।
तिनको वंदों भावसों, निश्चय करि निरधार ॥ १ ॥
बहिरभाव सब छोडकर, निजस्वभावमें लीन ।
होय होय मुकती गये, समझ देख परवीन ॥ २ ॥
सब तीर्थनमें सार है, श्रीसमेदगिरिराज ।
बीस जिनेश्वर और बहु, मोक्ष गये मुनिराज ॥ ३ ॥
ताकी कथनी वारता, जिन आगम अनुसार ।
कहता हूं कुछ वचनसों, सुनहु भविकजन सार ॥ ४ ॥

इस मध्य लोकमें एक लाख योजनका जम्बूद्वीप है उसके मध्यमें एक सुदर्शन मेरु है, जिसकी

दक्षिण दिशामें एक भरत नाम का क्षेत्र है। भरतक्षेत्रमें छह खंड हैं, जिसमें यह आर्यखंड बहुत प्रसिद्ध है। जिसमें मगध देशकी राजगृही नगरीमें एक श्रेणिक नामका राजा अपनी रानी चेलना सहित राज्य करता था।

राजगृही नगरीके समीप विपुलाचल, उदयगिरि, सोनागिरि, रत्नागिरि और विहारगिरि नामके पांच पर्वत हैं। उनमें विपुलाचल पर्वत पर श्री १००८ महावीर भगवानका समवसरण आया वनमालीने राजाके समीप जाकर निवेदन किया कि, महाराज! विपुलाचलपर त्रिलोकी नाथ वर्द्धमान भगवानका समवसरण आया है। सुनकर राजा इतना प्रसन्न हुआ कि उसने अपने शरीर परके सारे आभूषण उतारकर मालीको दे दिये, और सिंहासनसे उतर कर सात पैड (कदम) परवतकी तरफ चलकर साष्टांग नमस्कार किया तत्काल ही शहरमें घोषणा कराई कि, महावीर भगवानका समवसरण आया है इसलिये सब लोग दर्शन पूजनके लिये चलो। और आप भी हाथी पर आरूढ होकर वन्दनाके लिये चला। दूरसेही समवसरण देखकर हाथीसे उतर पड़ा और फिर समीप जाकर उसने भावपूर्वक वन्दनाकी। मनुष्य मंडलीमें बैठकर भगवान् की दिव्यध्वनि द्वारा धर्मामृतका पान किया तत्पश्चात् अवसर पाकर हाथ जोड़ खड़ा होकर पूछा — भगवन्! श्रीऋषभदेव, अजितनाथ आदि तीर्थकर किस क्षेत्रसे मोक्षको प्राप्त हुए और आपका निर्वाण कहांसे होगा? इसके सिवाय पूर्व कालमें अनंतानंत

चौबीसी किन २ क्षेत्रोंसे मोक्ष गई है, भविष्यमें अनन्तानंत तीर्थंकर जो मोक्ष जावेंगे, सो किस क्षेत्रसे जावेंगे ? और उन तीर्थंकरों के मध्यवर्ती समयमें कौन २ मुक्ति गये हैं चौबीस-तीर्थंकर जिस क्षेत्रसे मोक्ष जाते हैं, उस क्षेत्रके दर्शनसे क्या फल होता है ? और आगे ऐसी यात्रा किस २ ने की है तथा उन्हें क्या २ फल मिले हैं, इन सब प्रश्नोंके उत्तर आप कृपाकरके विस्तारपूर्वक कहिये ?

यह सुनकर भगवानकी दिव्यध्वनि हुई कि राजा श्रेणिक ! तुमने बहुत अच्छे प्रश्न किये अब तुम उनका उत्तर चित्तको समाधान करके सुनो।

पूर्वकालमें अनंतानंत चौबीस तीर्थंकर श्रीसम्मेदशिखर पर्वतपरसे मोक्षको प्राप्त हुए हैं और आगे (भविष्यमें) भी जो अनंतानंत चौबीस तीर्थंकर होंगे, वे श्रीसम्मेदशिखरसे ही मोक्ष जावेंगे इसी प्रकार चौवीसों तीर्थंकरों का जन्म भी श्रीअयोध्या नगरीमें होता है और होवेगा परन्तु वर्तमान कालमें केवल २० ही तीर्थंकर इस सम्मेदशिखर से मोक्ष गये हैं। क्योंकि श्रीऋषभदेव कैलास पर्वतसे वासुपूज्य चंपापुरसे तथा नेमिनाथ गिरनारसे मोक्ष जा चुके हैं, और हम पावापुरसे मोक्ष जावेंगे। शेष बीस तीर्थंकर श्री सम्मेदशिखरजी से निर्वाण प्राप्त हुये हैं। इसी प्रकारसे वर्तमान कालमें अयोध्या नगरीमें केवल ५ तीर्थंकरोंका जन्म हुआ है। शेष १९ का अन्यान्य नगरियों में हुआ है।

यह सुनकर राजा श्रेणिकने पूछा—भगवन्! ऐसा होनेका क्या कारण है? एकही स्थानमें जन्म और एकही स्थानमें मोक्ष होनेका जो नियम है उसका भंग क्यों हुआ?

भगवान ने उत्तर दिया कि हे राजन्! यह एक कालका दोष है। अनंतानंत कोड़ाकोड़ी उत्सर्पिणीकाल व्यतीत होनेपर कोई एक ऐसा ही काल आ जाता है जिसमें इस नियमका उल्लंघन हो जाता है अर्थात् उसके प्रभावसे अनेक तीर्थंकरों का जन्म और निर्वाण अन्य २ स्थानों से हो जाता है ऐसे कालको हुंडावसर्पिणी कहते हैं इस विषयमें तुम कुछ सन्देह मत करो। यथार्थ में चौबीसों तीर्थंकरों की जन्मभूमि अयोध्या है और निर्वाणभूमि श्रीसम्मेदशिखरजी ही है।

राजाश्रेणिक—भगवन्! आपने जिस प्रकार कहा वही सत्यार्थ है अब कृपा करके यह बतलाइये कि श्रीऋषभदेवसे लगाकर आप तकके निर्वाणक्षेत्रोंकी वंदना का फल क्या है और शिखरजी की यात्रा करके आगे किस २ को क्या २ फल मिले तथा आगे क्या २ मिलेंगे?

वीर भगवान्—हे राजन्! कैलाश पर्वतसे दशहजार मुनि मोक्षको प्राप्त हुए हैं और श्रीसम्मेदशिखरजीपर बीस टोंकें हैं उनमें से सिद्धवरकूटसे श्री अजितनाथ तीर्थंकर एक अरब अस्सीकरोड़ चौवनलाख एक हजार मुनियों सहित मोक्ष गये हैं। इस टोंककी वन्दनाका फल बत्तीस करोड़ उपवासके बराबर है दूसरे धवलदत्त कूटसे संभवनाथ तीर्थंकर नव्वे कोड़ाकोड़ी बहत्तरलाख सात

हजार पांचसौ ब्यालीस मुनियों सहित मोक्ष पधारे हैं। इस कूटके दर्शन करने का फल ब्यालीस लाख उपवास करने के बराबर है तीसरे आनन्द कूटसे श्रीअभिनन्दन तीर्थंकर तिहत्तर कोड़ाकोड़ी सत्तर करोड़ सत्तर लाख सात हजार पांच सौ ब्यालीस मुनियों के सहित निर्वाण प्राप्त हुए हैं। इस कूटके दर्शन करनेका फल सोलह लाख उपवास करनेके फलके तुल्य है। चौथे अविचलकूटसे सुमतिनाथ तीर्थंकर एक कोड़ाकोड़ी चौरासी करोड़ बहत्तर लाख सात सौ इक्यासी मुनियों सहित मोक्ष पधारे हैं। इस कूटके दर्शन करनेका फल एक करोड़ उपवास करनेके समान है। पांचवे मोहनकूटसे पद्मप्रभ तीर्थंकर निन्यानवे करोड़ चौरासी लाख बियालीस हजार सातसौ सतासी मुनि सहित मोक्ष प्राप्त हुए हैं। इस कूटके दर्शनका फल बत्तीस करोड़ उपवास करने के तुल्य है। छठे प्रभास कूटसे सुपार्श्वनाथ तीर्थंकर तीन करोड़ बहत्तर लाख सात हजार सातसौ ब्यालीस मुनि सहित मुक्ति गये हैं। इस कूटके दर्शन करनेका फल बत्तीस करोड़ उपवास के बराबर है। सातवें ललितकूटसे चन्द्रप्रभ तीर्थंकर चौरासी कोड़ाकोड़ि बहत्तर करोड़ अस्सीलाख चौरासी हजार पांचसौ पचपन मुनि सहित मोक्षगये हैं। इस कूटके दर्शन करनेका फल सोलह करोड़ उपवासके तुल्य है। आठवें सुप्रभकूटसे श्रीपुष्पदन्त तीर्थंकर निन्यानवे करोड़ नब्बैलाख नौ हजार चार सौ अस्सी मुनि सहित मुक्ति गये हैं। इस कूटके दर्शन करनेका फल सोला करोड़

उपवासके बराबर है। नवमें विद्युतवर कूट से शीतल नाथ तीर्थंकर अठारह कोड़ाकोड़ी बियालीस करोड़ बत्तीस लाख बियालीस हजार नौसे पांच मुनियों ने मुक्त पाई है। इस कूटके दर्शनका फल भी बत्तीस करोड़ उपवास करने के बराबर है दशवें संकुलकूटसे श्रेयांसनाथ तीर्थंकर छयानवे कोड़ाकोड़ी छयानवे करोड़ छयानवे लाख पैंतालीस हजार पांचसौ ब्यालीस मुनियोंने मुक्ति पाई है। इस कूटके दर्शन करने का फल भी एक करोड़ उपवास करने के बराबर है।

चंपापुरसे वासुपूज्य तीर्थंकर हजार मुनि सहित मोक्ष पधारे हैं। सम्मेदशिखर के ग्यारहवें संबल कूटसे विमलनाथ तीर्थंकर सत्तर कोड़ाकोड़ी सात लाख छह हजार सातसौ बियालीस मुनि मुक्ति गये हैं। इस कूटके दर्शन का फल एक करोड़ उपवास करने के बराबर है। बारहवें स्वयंभूकूटसे अनंतनाथ तीर्थंकर छयानवे कोड़ाकोड़ी सतरह करोड़ सतर लाख सतर हजार सात सौ मुनि मोक्ष गये हैं। इस कूटके दरशनका फल एक करोड़ उपवास करने के तुल्य है। तेरहवें सुदत्तवर कूटसे धर्मनाथ तीर्थंकर उनीस करोड़ नौ लाख नव हजार सातसौ पचास मुनि मुक्त हुए हैं दरशन करनेका फल एक करोड़ उपवास करनेके बराबर हैं। चौदहवे शांतिप्रभकूटसे श्रीशांतिनाथ तीर्थंकर एक कोड़ाकोड़ी नव करोड़ नव लाख नव हजार नव सौ निन्नानवे मुनियोंने पंचमगति पाई है इसके दरशन करनेका फल एक करोड़ उपवास करने के बराबर हैं। पंद्रहवें ज्ञानधर कूट

से श्रीकुंथुनाथ तीर्थंकर छ्यानवे कोडाकोडी छ्यानवे करोड़ बत्तीस लाख छ्यानवे हजार सातसौ ब्यालीस मुनि मोक्ष धामको गये हैं। दर्शन करनेका फल एक करोड़ उपवास करनेके बराबर है। सोलहवे नाटक कूटसे श्री अरनाथ तीर्थंकर निन्यानवे करोड़ निन्यानवे लाख निन्यानवे हजार नवसे नब्बे मुनियोंने मुक्ति लक्ष्मी प्राप्त की है इस कूटके दर्शन करनेका फल छ्यानवे करोड़ उपवास करने के बराबर है सत्रहवे संवलकूटसे श्रीमल्लिनाथ तीर्थंकर निन्यानवे करोड़ मुनि परमपद को प्राप्त हुए हैं। इसका दर्शन करना एक करोड़ उपवास करने के बराबर है अठारहवें निर्जराकूट से श्रीमुनिसुव्रतनाथ तीर्थंकर निन्यानवे कोडाकोडी, सतानवे करोड़ नौ लाख नौ सौ निन्यानव मुनि मुक्ति धामको गये हैं। इस टौंक के दर्शनका फल एक करोड़ उपवास करने के समान है। उन्नीसवे मित्रधर कूटसे श्री नमिनाथ तीर्थंकर नौ सौ कोडाकोडी पैंतालीस लाख सात हजार नौ सौ बियालीस मुनि कर्मोंसे छूटे हैं। इस टौंकके दर्शनका फल एक करोड़ उपवास करने के बराबर है।

गिरनार पर्वतसे श्रीनेमिनाथ तीर्थंकर पांच सौ छत्तीस मुनिसहित मोक्ष प्राप्त हुए हैं। तथा बहत्तर करोड़ सातसौ मुनि और गिरनार पर्वतसे मुक्त हुए हैं।

सम्मेदशिखरके बीसवें सुवर्णभद्र कूटसे श्रीपार्श्वनाथ तीर्थंकर एक करोड़ पैंतालीस लाख सात हजार सात सौ दश अधिक मुनि मुक्त हुए हैं। इस कूटके दरशन करनेका फल एक करोड़ उपवास करनेके फलके बराबर है।

इसके पश्चात श्रीगौतमगणधर बोले—हे राजन् ! ये महावीर भगवान पावापुरी के पद्मसरोवर मेंसे छत्तीस मुनियों के सहित मोक्ष जावेंगे तथा शिखरजीकी जिन्होंने पूर्वकालमें यात्रा की है, उन मेंसे थोड़ेके नाम में कहता हूं—सगर, सागर, मघवा सनत्कुमार, प्रभासेन आनन्द, ललितदन्त, कुंदसेन, सेनादत्त वरदत्त, सोमप्रभ, चारुसेन आदि इनके सिवाय और भी हजारों राजाओंने यात्राकी है, परंतु उनमेंसे दरशन केवल उन्ही को हुए हैं जो भव्य थे अभव्यों को दरशन नहीं मिलते।

श्रेणिक—हे भगवन् ! शिखरजीकी यात्रा करनेका फल जो कुछ आपने कहा सो तो यथार्थ है परंतु उससे अधिक तथा सम्पूर्ण फल और क्या है वह कृपा करके कहो।

गौतमस्वामी—हे राजन् शिखरजीकी यात्रा करनेवाला फिर संसारमें अधिक नहीं भटकता उनचास भव लेकर वह जीव पचासवें भवमें अवश्य ही सिद्धस्थानमें जाकर अजर अमर अखंड सदा जागती जोत होकर अचल रहता है यह नियम है। इसके सिवाय यात्रा करनेवाला नरक तिर्यंच गतिमें तथा स्त्रीपर्याय में भी जन्म नहीं लेता।

श्रेणिक—यदि ऐसा है, तो भगवन् ! रावणने शिखरजीकी यात्रा की फिर उसे नरकगति क्यों प्राप्त हुई ?

गौतम०—रावण शिखरजीकी यात्रा करने के लिये नहीं किन्तु त्रैलोक्यमंडन हाथीको पक-

ड़ने के लिये मधुवन गया था। इसलिये वह यात्राके फलका भागी नहीं हो सकता।

श्रेणिक—भगवन् ! यदि कोई बिना भावसे शिखरजीकी यात्रा करे तो उसको नरक तिर्यंच गति छूटे कि नहीं।

गौतम०—राजन् ! जिस प्रकारसे बिना भावसे खाई मिश्री मीठी लगती है और दवाई रोगको शांत करती है उसी प्रकारसे बिना भावसे की हुई यात्रा भी ऐसा नहीं है कि फलवती न हो।

श्रेणिक—भगवन् ! आपने कहा कि भव्यको यात्रा होती है परंतु अभव्यको नहीं होती सो यह बतलाइये कि, खास शिखरजीमें भीलादिक तथा पृथ्वी जल वनस्पति एकेन्द्रियादिक जीव राशि हैं वे सब भव्य हैं अथवा अभव्य ?

गौतम०—सम्मेदशिखर पर जितने जीवराशि हैं वे सब भव्य राशि हैं।

श्रेणिक—भव्य किसे कहते हैं ?

गौतम०—जो जीव मुक्त अवस्था प्राप्त करने वाले होते हैं वे भव्य कहाते हैं।

इस प्रकार राजा श्रेणिक श्रीसम्मेदशिखर सिद्ध क्षेत्रका माहात्म्य सुनकर बहुत आनंदित हुआ और अपनी रानी चेलना सहित यात्राके लिये चला परंतु ज्योंही पर्वतके निकट पहुचा त्यों ही वहां के निवासी कुशलाख्य व्यंतर देवोंने चारो ओर घोर अंधकार कर दिया। धूलवृष्टि, मेघगर्जन पाषा-

गावृष्टि आदि अनेक प्रकारके और भी विघ्न किये तब रानी चेलनाने समझाया—नाथ ! आपको यात्रा नहीं होवेगी क्योंकि जिस समय आपने दिगम्बर मुनिराजके गलेमें मरा हुआ सर्प डाला था उसी समय आपको नरकगतिका बंध पड़ चुका है । इसलिये इस पर्यायमें तीर्थराजके दरशन होना असंभव है यह सुनकर राजा अपने कर्मों की गति जानकर अपने नगरको लौट गया ।

दोहा ।

सिद्ध क्षेत्र सुप्रसिद्ध है, जिन आगम में सार ।
धर्मदास क्षुल्लक कहै, श्रीसमेदगिरि पार ॥ १ ॥
ताकी कथनी वारता, कह गये श्रीमुनिराज ।
अब ताहीकी वचनिका, यह कीनी निज काज ॥ २ ॥

इति समाप्त ॥





श्रीसम्मेदाचल पूजा ।

दोहा ।

सिद्धक्षेत्र तीरथ परम, है उतकृष्ट सु थान ।
शिखरसमेद सदा नमो, होय पापकी हान ॥ १ ॥
अगणित मुनि जहतैं गए, लोकशिखरके तीर ।
तिनके पदपंकज नमो, नाशै भवकी पीर ॥ २ ॥

अड़िल्ल।

है उज्वल वह क्षेत्र सुअति निरमल सही।
परम पुनीत सुठौर महा गुणकी मही॥
सकल सिद्धि दातार महा रमणीक है।
बन्दों निज सुखहेत अचल पद देत है॥ ३॥

सोरठा।

शिखरसमेद महान, जगमें तीर्थ प्रधान है।
महिमा अदभुत जान, अल्प मती मैं किमि कहों॥ ४॥

सुंदरी छंद।

सरस उन्नत क्षेत्र प्रधान है। अति सु उज्वल तीर्थ महान है॥
करहिं भक्ति सु जे गुण गायकें। वरहिं सुर शिवके सुख जायकें॥ ५

अडिल्ल।

सुर हरि नर इन आदि, और बंदन करें।
भव सागरतैं तिरैं, नहीं भवमें परें।
सफल होय तिन जन्म शिखर दरशन करें,
जन्मजन्मके पाप सकल छिनमें टरें॥ ६॥

पद्धड़ी छंद।

श्रीतीर्थंकर जिनवर जु वीश, अरु मुनि असंख्य सब गुणन ईश।
पहुंचे जहंतैं कैवल्य धाम, तिनको अब मेरी है प्रणाम॥ ७॥

गीतिका छंद।

सम्मेदगढ है तीर्थ भारी सबहिकों उज्वल करै।
चिरकालके जे कर्म्म लागे दर्शतैं छिनमें टरै॥

१ मोक्ष।

है परमपावन पुण्यदायक अतुलमहिमा जानिये ।
है अनूप सुरूप गिरिवर तासु पूजन ठानिये ॥ ८ ॥

दोहा ।

श्रीसम्मेदशिखर सदा, पूजों मन वच काय ।
हरत चतुर्गतिदुःखकों मनवांछित फल दाय ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्रीसम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्र ! अत्र अवतर अवतर । संवौषट् ।
ॐ ह्रीं श्रीसम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।
ॐ ह्रीं श्रीसम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव । वषट् ।

इस प्रकार तीन बार ठोनेमें पुष्पों से आह्वननादि करें ।

अथ अष्टक ।

अडिल्ल ।

क्षीरोदधि सम नीर सु निरमल लीजिये ।

कनक कलशमें भरके धारा दीजिये ॥
पूजों शिखरसमेद सुमनवचकाय जी ।
नरकादिकदुख टरें अचलपद पाय जी ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्रीसम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्रेभ्यो विंशतितीर्थंकराद्यसंख्यातमुनिसिद्धपदप्राप्तेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १ ॥

पयसों घसि मलयागिरिचंदन लाइये ।
केसरि आदि कपूर सुगंध मिलाइये ॥
पूजों शिखरसमेद सुमनवचकाय जी ।
नरकादिक दुख टरें अचलपद पाय जी ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं श्रीसम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्रेभ्यो विंशतितीर्थंकराद्यसंख्यातमुनिसिद्धपदप्राप्तेभ्यो संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ॥ २ ॥

तन्दुल धवल सुवासित उज्वल धोयकें ।
हेमरतनके थार भरों शुचि होयकें ॥
पूजों शिखरसमेद सुमनवचकाय जी ।
नरकादिकदुख टरें अचलपद पाय जी ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं श्रीसम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्रेभ्यो विंशतितीर्थंकराद्यसंख्यातमुनिसिद्धपदप्राप्तेभ्यो अक्षय-पदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ॥ ३ ॥

सुरतरुके सम पुष्प अनूपम लीजिये ।
कामदाहदुखहरण चरण प्रभु दीजिये ॥
पूजों शिखरसमेद सुमनवचकाय जी ।
नरकादिक दुख टरें अचलपद पाय जी ॥ ४ ॥

ओं ह्रीं श्रीसम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्रेभ्यो विंशतितीर्थंकराद्यसंख्यातमुनिसिद्धपदप्राप्तेभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ४ ॥

कनकथार नैवेद्य सु षटरसतैं भरे।
देखत क्षुधा पलाय सुजिन आगैं धरे॥
पूजों शिखरसमेद सुमनवचकाय जी।
नरकादिक दुख टरैं अचलपद पाय जी॥ ५॥

ओं ह्रीं श्रीसम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्रेभ्यो विंशतितीर्थंकरादिअसंख्यातमुनिसिद्धपदप्राप्तेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ ५॥

लेकर मणिमय दीप सुज्योति प्रकाश है।
पूजत होत सुज्ञान मोहतम नाश है॥
पूजों शिखरसमेद सुमनवचकाय जी।
नरकादिक दुख टरैं अचलपद पाय जी॥ ६॥

ओं ह्रीं श्रीसम्मेदसिखरसिद्धक्षेत्रेभ्यो विंशतितीर्थंकरादिअसंख्यातमुनिसिद्धपदप्राप्तेभ्यः मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा॥ ६॥

दशविधि धूप अनूप अगनिमें खेवहूं ।
अष्टकर्मको नाश होत सुख-लेवहूं ॥
पूजों सिखरसमेद सुमनवचकाय जी ।
नरकादिक दुख टरें अचलपद पाय जी ॥ ७ ॥

ओं ह्रीं श्रीसम्मेदसिखरसिद्धक्षेत्रेभ्यो विंशतितीर्थंकरादिअसंख्यातमुनिसिद्धपदप्राप्तेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ७ ॥

एला लौंग सुपारी श्रीफल लाइये ।
फल चढाय मनवांछित शिवफल पाइये ॥
पूजों शिखरसमेद सुमनवचकाय जी ।
नरकादिक दुख टरें अचलपद पाय जी ॥ ८ ॥

ओं ह्रीं श्रीसम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्रेभ्यो विंशतितीर्थंकरादिअसंख्यातमुनिसिद्धपदप्राप्तेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ८ ॥

जल गन्धाक्षत पुष्प सुनेवज लीजिये ।
दीप धूप फल लेकर अर्घ सु दीजिये ॥
पूजों शिखरसमेद सुमनवचकाय जी ।
नरकादिकदुख टरैं अचलपद पाय जी ॥ ९ ॥

ओं ह्रीं श्रीसम्मेदसिखरसिद्धक्षेत्रेभ्यो विंशतितीर्थंकरादिअसंख्यातमुनिसिद्धपदप्राप्तेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ९ ॥

पद्धड़ी छन्द ।

श्रीविंशति तीर्थंकर जिनेंद्र । अरु असंख्यात जहंते मुनेंद्र ॥
तिनको करजोरि करौं प्रणाम । जिनकों पूजों ताजि सकल काम ॥१०॥

ओं ह्रीं श्रीसम्मेदसिखरसिद्धक्षेत्रेभ्यो विंशतितीर्थंकरादिअसंख्यातमुनिसिद्धपदप्राप्तेभ्यो महार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १० ॥

अडिल्ल ।

जे नर परम सुभावनतैं पूजा करैं ।
हरि हलि चक्री होंय राज छह खंड करैं ॥
फेरि होंय धरणेंद्र इंद्र पदवी धरें ।
नानाविध सुख भोगि बहुरि शिवतिय वरें ॥ ११ ॥

इत्याशीर्वादः (पुष्पाजलिं क्षिपेत्)

जोगीरास ।

श्रीसम्मेदशिखरगिरि उन्नत, शोभा अधिक प्रमानो ।
विंशति तिंहपर कूट मनोहर, अदभुत रचना जानो ॥
श्रीतीर्थंकर-वीस तहांतैं शिवपुर पहुंचे जाई ।
तिनके पदपंकज जुग पूजों अर्घ प्रत्येक चढाई ॥ १ ॥

ओं ह्रीं श्रीसम्मेदसिखरसिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १ ॥

नं० २४ अजितनाथ सिद्धवर कूट ।

प्रथम सिद्धवर कूट सुजानो, आनंद मंगलदाई ।
अजितनाथ जहंतें शिव पहुंचे पूजों मनवचकाई ॥
कोडि जु अस्सी एक अरब मुनि, चौवन लाख जु गाई ।
कर्म्म काटि निर्वाण पधारे, तिनकों अर्घ चढाई ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं श्रीसम्मेदसिखरसिद्धक्षेत्रसिद्धवरकूटतें अजितनाथजिनेंद्रादि मुनि असीकोटि एक अरब चौवनलाख सिद्धपदप्राप्तेभ्यः सिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ २ ॥

नं० १४ सम्भवनाथ धवलकूट ।

धवलदत्त है कूट दूसरो, सब जियको सुखकारी ।
श्रीसम्भव प्रभु मुक्ति पधारे पापतिमिरकों टारी ॥

धवलदत्त दे आदि मुनी, नव कोडाकोडी जानो ।
लाख बहत्तरि सहस वियालिस पंचशतक ऋषि मानो ॥
कर्म्मनाश करि शिवपुर पहुंचे वंदों शीश नवाई ।
तिनके पदजुग जजहुं भावसों हरषि २ चितलाई ॥

ओं ह्रीं श्रीसम्मेदसिखरशिद्धक्षेत्रधवलकूटतें सम्भवनाथजिनेंद्रादि मुनि नौकोडाकोडीबहत्तर-लाखव्यालीसहजारपांचसौसिद्धपदप्राप्तेभ्यः सिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घं निर्व० स्वाहा ॥ ३ ॥

नं० १६ अभिनंदननाथ आनंदकूट ।

चौपाई

आनंदकूट महासुखदाय । अभिनंदन प्रभु शिवपुर जाय ॥
कोडाकोडि बहत्तर जान । सत्तरकोडि लखछत्तिस मान ॥
सहस वियालिस शतक जु सात । कहे जिनागममें इह भांत ॥
ए ऋषि कर्मकाटि शिवगए । तिनके पदजुग पूजत भए ॥४॥

ओं ह्रीं श्रीसम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्र आनंदकूटतैं श्रीअभिनंदनजिनेंद्र आदिमुनिबहत्तरकोडाकोडी सत्तरकोडि छत्तिसलाख ब्यालिसहजार सातसौ सिद्धपदप्राप्तेभ्यः सिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ४ ॥

नं० ११ सुमतिनाथ अविचलकूट ।

अडिल्ल ।

अविचल चौथो कूट महासुखधाम जी ।
जहंते सुमतिजिनेश गये निर्वाण जी ॥
कोडाकोडी एक मुनीश्वर जानिये ।
कोटि चौरासी लाख बहत्तर मानिये ॥
सहस इक्यासी और सातसौ गाइये ।
कर्म काटि शिव गए नमो शिर नाइये ॥

सो थानक मैं पूजूं मनवचकाय जी ।

पाप दूर होजांय अचलपद पाय जी ॥ ५ ॥

ओं ह्रीं श्रीसम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्रअविचलकूटतैं सुमतिनाथजिनेन्द्रादि मुनि एककोड़ाकोड़ी चौरासीकोड़ि बहत्तरलाख इक्यासीहजार सातसौ सिद्धपदप्राप्तेभ्यः सिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ५ ॥

नं० ८ पद्मप्रभ मोहनकूट ।

मोहन कूट महान परम सुंदर कह्यो ।

पद्मप्रभ जिनराज जहां शिवपुर लह्यो ॥

कोटि निन्यानवे लाख सतासी जानिये ।

सहस तियालिस और मुनीश्वर मानिये ॥

सत सैकरा सत्तर ऊपर बीसजू ।

मोक्ष गए मुनि तिनकों नमुं नित शीसजू ॥

कहैं 'जवाहरलाल' दोयकर जोरिके ।
अविनाशीपद दे प्रभु कर्मन तोरिके ॥ ६ ॥

ओं ह्रीं श्रीसम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्रमोहनकूटतैं पद्मप्रभजिनेंद्रमुनि निन्यानवेकोडि सतासीलाख- तितालीसहजार सतसौसत्तर वीससिद्धपदप्राप्तेभ्य सिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ६ ॥

नं० २२ सुपार्श्वनाथप्रभासकूट ।

सोरठा ।

कूट प्रभास महान, सुंदर जनमन मोहनो ।
श्रीसुपार्श्व भगवान, मुक्तिगए अघनाशके ॥
कोडाकोडि उनचास, कोडि चौरासी जानिये ।
लाख बहत्तर मान, सात सहस हैं सात सौ ॥

और कहे ब्यालीस अहतैं मुनि मुक्ती गए ।
तिनहिं नमै नित शीश, दास जवाहर जोरकर ॥ ७ ॥

ओं ह्रीं श्रीसम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्रप्रभासकूटतें श्रीसुपार्श्वनाथजिनेंद्रादिमुनि उनचासकोडाकोडी चौरासीकोडि बहत्तरलाख सातहजार सातसौ बियालीस सिद्धपदप्राप्तेभ्यः सिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ७ ॥

नं० १० चन्द्रप्रभुललितकूट ।

दोहा ।

पावन परम उतंग है, ललितकूट है नाम ।
चन्द्रप्रभ शिवकों गए वंदों आठों जाम ॥
कोडाकोडी जानिये, चौरासी ऋषिमान ।
कोडि बहत्तर हम कहे, अस्सी लाख प्रमान ।
सहस चौरासी पंचशत, पचपन कहे मुनिंद ॥

वसुकरमनको नाशकर, पायो सुखको कंद ।
ललितकूटतैं शिवगए, वदौं शीश नमाय ॥
जिनपद पूजौं भावसों, निजहित अर्घ चढ़ाय ॥ ८ ॥

ओं ह्रीं श्रीसम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्रललितकूटतैं चन्द्रप्रभजिनेंद्रादिमुनि चौरासीकोड़ाकोड़ीबहत्तरकोड़िअसीलाख चौरासीहजार पांचसौ पचपन सिद्धपदप्राप्तेभ्यः सिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ८ ॥

नं० ७ पुष्पदंतसुप्रभकूट ।

पद्धड़ी छन्द ।

श्रीसुप्रभकूट सु नाम जान । जंह पुष्पदंतको मुक्ति थान ॥
मुनि कोड़ाकोड़ि कहे जु भाख । नव ऊपर नवधर कहे लाख ॥
शतचारि कहे अरु सहससात । ऋषि अस्सी और कहे विख्यात ॥
मुनि मोक्षगए हनिकर्म्मजाल । बंदौ करजोरि नमाय भाल ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्रीसम्मेदसिखरसिद्धक्षेत्रसुप्रभकूटतैं पुष्पदन्तजिनेंद्रादिमुनि एककोडाकोडीनिन्यानवेलाख सातहजार चारसौ असी सिद्धपदप्राप्तेभ्यः सिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ६ ॥

नं० १२ शीतलनाथ विद्युतकूट।

सुन्दरी छन्द।

सुभग विद्युतकूट सु जानिये। परम अदभुत तापर मानिये ॥
गए शिवपुर शीतलनाथजी। नमहुं तिन इह करधर माथजी ॥
मुनि जु कोडाकोडि अठारहू। मुनि जु कोडिबियालीस जानहू ॥
कहे और जु लाखबतीस जू। सहसब्यालीस कहे यतीश जू ॥
अवर नौसौ पांच जु जानिये। गए मुनि शिवपुरको मानिये ॥
करहिं जे पूजा मन लायके। धरहिं जन्म न भवमें आयके ॥

ओं ह्रीं श्रीसम्मेदसिखरसिद्धक्षेत्रविद्युतकूटतैं शीतलनाथजिनेंद्रादिमुनिअठारहकोडाकोडीन्या

तीसकोडिबत्तीसलाखब्यालीसहजारनौसैपांच सिद्धपदप्राप्तेभ्यः सिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १० ॥

नं० ६ श्रेयांसनाथ संकुलकूट ।

जोगीरासा।

कूट जु संकुल परम मनोहर, श्रीश्रेयान् जिनराई ।
कर्मनाश कर शिवपुर पहुंचे, बंदौं मनवचकाई ॥
छ्यानव कोडाकोडी जानो, छ्यानवकोडि प्रमानो ।
लाख छ्यानवे सहस मुनीश्वर, साढे नव अब जानो ॥
ता ऊपर ब्यालीस कहे हैं श्रीमुनिके गुण गावैं ॥
त्रिविधयोग करि जो कोई पूजें, सहजानंदपद पावैं ॥
सिद्ध नमो सुखदायक जगमें, आनद मंगलदाई ।

जजौं आयलौं चरण जिनेश्वर, हाथ जोडि शिरनाई।
परम मनोहर थान सु पावन, देखत विघन पलाई॥
तीन काल नित नमत जवाहर मेटो भवभटकाई।
जहंते जे मुनि सिद्ध भए हैं, तिनको शरण गहाई।
जा पदको तुम प्राप्त भए हो, सो पद देहु मिलाई॥ ११॥

ओं ह्रीं श्रीसम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्रसंकुलकूटतें श्रीश्रेयांसनाथजिनेंद्रादिमुनि छ्यानवे कोड़ाकोड़ी छ्यानवेकोड़ि छ्यानवेलाख नवहजार पांचसौ बियालीस सिद्धपदप्राप्तेभ्यः सिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥ ७॥

नं० २२ विमलनाथसुवीरकुलकूट।

कुसुमलता छंद।

श्रीसुवीरकुल कूट परम सुन्दर सुखदाई,
विमलनाथ भगवान जहां पंचमगति पाई।

कोडि जु सत्तर सात लाख षटसहस जु गाई,
सात सतक मुनि और वियालीस जानो भाई ॥

दोहा ।

अष्टकर्म्मको नष्टकर, मुनि अष्टमक्षिति पाय ।
तिनप्रति अर्घ चढावहूं, जनम मरण दुख जाय ॥
विमलदेव निरमल करण, सब जीवन सुखदाय ।
मोतीसुत वंदत चरण, हाथजोर शिरनाय ॥

ओं ह्रीं श्रीसम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्र सुवीरकुलकूटतें श्रीविमलनाथजिनेंद्र आदिमुनि सत्तरकोडि सातलाख छहहजार सातसौव्यालीस सिद्धपदप्राप्तेभ्यः सिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ४ ॥

नं० १३ अनन्तनाथ स्वयंभूकूट ।

अड़िल्ल।

कूट स्वयंभू नाम परम सुन्दर कह्यो।
प्रभु अनंतजिननाथ जहां शिवपद लह्यो॥
मुनि जु कोडाकोडि छ्यानवे जानियें।
सत्तर कोडि जु सत्तरलाख प्रमानिये॥
सतर सहस जु और मुनीश्वर गाइये।
सात सतक ता ऊपर तिनको ध्याइये॥
कहैं जवाहरलाल सुनो मनलायके।
गिरिवरकों नित पूजो अति सुखपायके॥

सोरठा।

पूजत विघन पलाय, ऋद्धि सिद्धि आनंद करै।
सुर शिवको सुखदाय, जो मनवच पूजा करै॥ १२॥

ओं ह्रीं श्रीसम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्रस्वयंभूकूटतैं अनंतनाथजिनेन्द्रादि मुनि छ्यानवैकोड़ाकोड़ी सत्तरिकोड़ि सत्तरलाख सत्तरहजार सातसौ सिद्धपदप्राप्तेभ्यः सिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ९ ॥

नं० १८ धर्मनाथ सुदत्तकूट ।

कूट सुदत्त महाशुभ जान । श्रीजिन धर्म्मनाथको थान ॥
मुनि कोडाकोडी उनईस । और कहे ऋषि कोडि उनीश ॥
लाख जु नव नौसहस सु जान । सात शतक पंचानव मान ॥
मोक्षगए वे कर्म्मनचूर । दिवस रु रयनि नमो भरपूर ॥
माहिमा जाकी अतुल अनूप । ध्यावत वर इंद्रादिक भूप ॥
शोभत महा अचलपद पाय । पूजों आनंद मंगल गाय ॥

दोहा ।

परम,पुनीत पवित्र अति, पूजत शत सुरराय ।

तिहं थानककों देख कर, मोतीखुत गुणगाय ॥
पावन परम सुहावनो, सब जीवन सुखदाय ॥
सेवत सुर हरि नर सकल, मनवांछितपदपाय ।
ॐह्रीं श्रीसम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्रसुदत्तकूटतें धर्मनाथ जिनेंद्रादिमुनि उन्नीसकोडाकोडी उन्नीसकोडि नोलाख नोहजार सातसौ पंचानवै सिद्धपदप्राप्तेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ३ ॥

नं० २० शान्तिनाथ शांतिप्रभकूट ।

सुगीतिका-छन्द ।

श्रीशांति प्रभ है कूट सुन्दर अति पवित्र सु जानिये ।
श्रीशांतिनाथ जिनेंद्र जहंतें परमधाम प्रमानिये ॥
नव जु कोडा कोडि मुनिवर लाख नव अब जानिये ।
नौ सहस नवसै मुनि निन्यानव हृदयमें धर मानिये ॥

दोहा।

कर्म्मनाश शिवको गए, तिन प्रति अर्घ चढाय।
त्रिविधयोग करि पूज हैं, मनवांछित फलपाय ॥

ओं ह्रीं श्रीसम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्रशांतिप्रभकूटतैं शांतिनाथ जिनेंद्रादिमुनि नोकोडाकोडि नोलाख नोहजार नोसै निन्यानवे सिद्धपदप्राप्तेभ्यः सिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ४ ॥

नं० २ कुन्थुनाथ ज्ञानधरकूट।

गीतिका–छन्द।

ज्ञानधर शुभकूट सुंदर परम मन मोहन सही।
जहतें श्रीप्रभु कुन्थुस्वामी गए शिवपुरकी मही ॥
कोडा सु कोडी छ्यानवे मुनि कोडि छ्यानव जानिये।
अर लाख बत्तिस सहसछ्यानव शतकसात प्रमानिये ॥

दोहा ।

और कहे ब्यालीस मुनि, सुमिरौं हिये मंझार ।
तिनपद पूजों भावसें, कर भवदधिसे पार ॥ १६ ॥

ॐ ह्रीं श्रीसम्मेदसिखरसिद्धक्षेत्रज्ञानधरकूटतैं श्रीकुंथुनाथजिनेंद्रादि मुनि छ्यानवैकोडाकोडी छ्यानवे कोटि बत्तीसलाख छ्यानवैंहजार सातसौ ब्यालीस सिद्धपदप्राप्तेभ्यः सिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ २ ॥

नं० ४ अरनाथ नाटककूट ।

दोहा ।

कूट जु नाटक परमशुभ, शोभा अपरम्पार ।
जहतैं अरजिनराज जी, पहुंचे मुक्तिमंझार ॥
कोडिनिन्यानव जानि मुनि, लाखनिन्यानव और ।
कहे सहस निन्यानवे, वन्दों कर जुग जोर ॥

अष्टकर्म्मको नष्ट करि, मुनि अष्टमक्षिति पाय।
ते गुरु मो हृदय बसो, भवदधि पार लगाय ॥

सोरठा।

तारण तरण जिहाज, भवसमुद्रके बीचमें।
पकरो मेरी बांह डूबतसे राखो मुझे ॥
अष्टकरम दुख दाय, ते तुमने चूरे सबै।
केवलज्ञान उपाय, अविनाशीपद पाइयो ॥
मोतीसुत गुणगाय, चरणन शीशनवायके।
मेटो भवभटकाय, मांगत अब बरदान यों ॥ १७ ॥

ॐह्रीं श्रीसम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्रनाटककूटतैं अरनाथजिनेंद्रादि मुनि निन्यानवै कोडि निन्यानवै लाख निन्यानवै हजार सिद्धपदप्राप्तेभ्यो सिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ २ ॥

स० १४

पू०

नं० ५ मल्लिनाथसम्बलकूट ।

सुन्दरी छन्द ।

कूट सम्बल परमपवित्र जू । गए शिवपुर मल्लिजिनेश जू ॥
मुनि जु छ्यानवकोडि प्रमानिये । पदजजत हृदये सुख आनिये ॥

मोतीदाम छन्द ।

भजो प्रभुनाम सदा सुखरूप, जजौ मनमें धर भाव अनूप ।
टरें अघपातिक जाहिं सु दूर, सदा जनको सुख आनंदपूर ॥
डरे ज्यों नाग गरुडको देखि, भजैं गजजुत्थ जु सिंहय पेखि ।
तुमनाम प्रभू दुखहर्ण सदा , सुखपूर अनूपम होय मुदा ॥
तुमदेव सदा अशरणशरणं , भट मोहवली प्रभुजी हरणं ।
तुम शरणगही हम आय अबै. मझ कर्म्मचली दिढ चूर सबै ॥१८॥

१४

ॐ ह्रीं श्रीसम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्रसम्बलकूटतैं श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्रादि मुनि छ्यानवै कोडी सिद्धक्षेत्रेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

नं० ९ मुनिसुव्रतनिर्जरकूट ।

मदअवलिप्तकपोल छंद ।

मुनिसुव्रत जिननाथ सदा आनंदके दाई ।
सुंदर निर्जरकूट जहांतैं शिवपुर जाई ॥
निन्यानवकोडाकोडि कहे मुनि कोडि सत्याना ।
नव लख जोडि मुनिन्द कहे नौसै निन्न्याना ॥

सोरठा ।

कर्म्म नाशि ऋषिराज, पंचमगतिके सुख लहे ।
तारणतरण जिहाज, मो दुखदूर करो सकल ॥

वली मोहकी फौज प्रभुजी भगाई, जग्यो ज्ञानपंचम महासुक्खदाई ।
समोशरण धरणेंन्द्रने तब बनायो । तबै देव सुरपति सबै शीशनायो ॥
जय जय जिनेंद्र सुशब्दं उचारी, भए आज दरशन सबै सुक्खकारी ।
गए सर्व पातिक प्रभू मूरहीतैं, जबै दर्श कीने प्रभू दूरहीतैं ॥
सुनी नाथ श्रवनो जु तेरी वडाई, गहे शरण हमने तुम्हारो सु आई ।
वली कर्म्मनाशे जबै मुक्ति पाई, तिन्हे हाथजोरें सदा शीश नाई ॥१९॥

ओं ह्रीं श्री सम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्र निर्जरकूटतैं मुनिसुव्रतनाथजिनेंद्रादि मुनिनिन्यानवैकोडाकोडी सत्यानवे कोडि नौलाख नौसेनिन्यानवै सिद्धपदप्राप्तेभ्यः सिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घं निर्व० स्वाहा ॥ ३ ॥

नं० ३ नमिनाथमित्रधरकूट।

जोगीरासा।

कूट मित्रधर परममनोहर, सुन्दर अति छविदाई।
श्रीनमिनाथ जिनेश्वर जहतैं, अविनाशीपदपाई॥
नौसै कोडाकोडी मुनिवर, एक अरब ऋषि जानो।
लाख पैंतालीस सातसहस, अरु नौसै ब्यालिस मानो॥

दोहा।

वसु करमनको नाश कर, अविनाशी पदपाय।
पूजो चरणसरोजकों, मनवांछितफलदाय॥

ओं ह्रीं श्रीसम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्र मित्रधर कूटतै नमिनाथजिनेंद्रादिमुनि नौसो कोडा-कोडि एकअरब पैंतालीसलाख सातहजार नौसो ब्यालीस सिद्ध पद प्राप्तेभ्यो सिद्धक्षेत्रेभ्योऽर्घ निर्वपामीति स्वाहा॥

नं० २६ पार्श्वनाथ सुवर्णभद्रकूट ।

दोहा ।

सुवरण भद्र जु कूटपै, श्री प्रभु पारसनाथ ।
जहंतैं शिवपुरको गए, नमो जोरिजुगहाथ ॥

त्रिभंगी छंद ।

मुनि कोडिचियासी लाख चैरासी शिवपुरवासी सुखदाई ।
सहस्रपैंतालीस सातसो व्यालीस ताजिके आलस गुणगाई ॥
भवदधितैं तारण पतित उधारण सबदुखहारण सुखकीजै ।
यह अरज हमारी सुनि त्रिपुरारी शिवपदभारी मोदीजै ॥

पद्धड़ी छंद ।

यह दर्शनकूट अनंत लह्यो । फल षोडशकोटि उपास कह्यो ।
जगमें यह तीर्थ कह्यो भारी । दर्शन करि पाप कटैं सारी ॥

मोतीदाम-छन्द ।

टरैं गति वंदत नर्क तिर्यंच । कबहुं दुखको नहिं पावै रंच ॥
यही शिवको जगमें है द्वार । अरे नर वन्दो कहत 'जवार' ॥

दोहा ।

पारशप्रभुके नामतैं, विघन दूरि टरि जाय ।
ऋद्धि सिद्धि निधि तासुको, मिलिहं निशिदिनआय ॥ २१ ॥

ओं ह्रीं श्रीसम्मेदसिखरसिद्धक्षेत्रेभ्यो विंशतितीर्थंकरादिअसंख्यातमुनिसिद्धपदप्राप्तेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ९ ॥

अडिल्ल ।

जे नर परमसुभावनतैं पूजा करैं, हरिहलि चक्री होंय राज्यषटखंडकरैं ॥
फेरिहोयधरणेंद्रइंद्रपदवीधरैं, नानाविधि सुख भोगि बहुरि शिवतिय वरैं॥

आशीर्वादः (पुष्पांजलि क्षिपेत्)

अथ समुच्चयपूजा ।

दोहा ।

याविध बीस जिनेशके, बीसो शिखर महान ।
और असंख्य मुनीश जहं, पहुंचे शिवपदथान ॥

ओं ह्रीं श्रीसम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्र ! अत्रावतर अवतर संवौषट् ।
ओं ह्रीं श्रीसम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।
ओं ह्रीं श्रीसम्मेदशिखरक्षेत्र ! मम संनिहितो भव भव वषट् ॥

अथ अष्टक ।

गीतका छन्द ।

पदमद्रहको नीर निर्मल, हेमझारीमें भरों ।
तृषारोग निवारनको, चरणतर धाराकरों ॥

सम्मेदगढतैं मुनि असंख्ये, करमहर शिवपुरगये।
सो थान परमपवित्र पूजौं, तासु फल पुनिसंचये॥ १॥

ओं ह्रीं असंख्यातमुनिसिद्धपदप्राप्तेभ्यो श्रीसम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्रेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा॥ १॥

चंदन कपूर मिलाय केसर, नीरसों घसि लाइये।
जिनराज पापविनाश हमरे, भवाताप मिटाइये॥
सम्मेदगढतैं मुनि असंख्ये, कर्महर शिवपुर गये।
सो थान परमपवित्र पूजों, तासु फल पुनिसंचये॥ २॥

ओं ह्रीं असंख्यातमुनिसिद्धपदप्राप्तेभ्यः श्रीसम्मेदसिखरसिद्धक्षेत्रेभ्यो संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा॥ २॥

चंद्रके सम ल्याय तंदुल, कनकथारनमें भरौं।
अक्षय सु पदके कारणे जिनराजपद पूजा करौं॥

सम्मेदगढतैं मुनि असंख्ये, कर्महर शिवपुर गये ।

सो थान परमपवित्र पूजों, तासु फल पुनिसंचये ॥ ३ ॥

ओं ह्रीं असंख्यातमुनिसिद्धपदप्राप्तेभ्यो श्रीसम्मेदसिखरसिद्धक्षेत्रेभ्यः अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ॥ ३ ॥

कुंद कमलादिक चमेली गंध कर मधुकर फिरैं ।

मदनबाण विनाशवेकों प्रभुचरण आगे धरैं ॥

सम्मेदगढतैं मुनि असंख्ये, कर्महर शिवपुरगये ।

सो थान परमपवित्र पूजों, तासु फल पुनिसंचये ॥ ४ ॥

ओं ह्रीं असंख्यातमुनिसिद्धपदप्राप्तेभ्यः श्रीसम्मेदशिखरक्षेत्रेभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ४ ॥

नेवज मनोहर थालमें भर, हरषकर ले आवने ।

करहु पूजा भावसों, नर क्षुधा रोग मिटावनें ॥

सम्मेदगढतैं मुनि असंख्ये, कर्महर शिवपुर गये ।
सो थान परमपवित्र पूजों, तासु फल पुनिसंचये ॥ ५ ॥

ओं ह्रीं असंख्यातमुनिसिद्धपदप्राप्तेभ्यः श्रीसम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्रेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ५ ॥

दीप ज्योति प्रकाश करके, प्रभुके गुण गावने ।
मोह तिमिर विनाश करके, ज्ञान भानु प्रकाशने ॥
सम्मेदगढतैं मुनि असंख्ये, कर्महर शिवपुरगये।
सो थान परमपवित्र पूजों तासु फल पुनिसंचये ॥

ओं ह्रीं असंख्यातमुनिसिद्धपदप्राप्तेभ्यः श्रीसम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्रेभ्यो मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ६ ॥

वर धूप सुंदर ले दशांगी, ज्वलनमांहि सु खेइये ।
वसु कर्मनाशनके सु कारण, पूज प्रभुकी कीजिये ॥

सम्मेदगढतैं मुनि असंख्ये, कर्महर शिवपुर गये।

सो थान परमपवित्र पूजों, तासु फल पुनि संचये ॥ ७ ॥

ओं ह्रीं असंख्यातमुनिसिद्धपदप्राप्तेभ्यः श्रीसम्मेदसिखरसिद्धक्षेत्रेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ७ ॥

उत्कृष्ट फल जगमांहिं जेते, ढूंढ करकैं लाइये,

जो नेत्र रसना लगैं सुंदर, फल अनूप चढाइये।

सम्मेदगढतैं मुनि असंख्ये, कर्महर शिवपुर गये,

सो थान परमपवित्र पूजों, तासु फल पुनि संचये ॥ ८ ॥

ओं ह्रीं असंख्यातमुनिसिद्धपदप्राप्तेभ्यः श्रीसम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्रेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ८ ॥

वसुद्रव्ययुत शुभ अर्घ लेकर, मनप्रफुल्लित कीजिये।

तुमदास यह वरदान मागें, मोक्षलक्ष्मी दीजिये ॥

सम्मेदगढतैं मुनि असंख्ये; कर्महर शिवपुर गये।

सो थान परमपवित्र पूजों, तासु फल पुनि संचये॥

ओं ह्रीं असंख्यातमुनिसिद्धपदप्राप्तेभ्यः श्रीसम्मेदसिखरसिद्धक्षेत्रेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥ ९॥

नितकरें जे नरनारि पूजा, भाव भक्ति सु लायके।

तिनको सुजस कह कहैं 'जवाहर' हरषमनमें धारके॥

ते है सुरेश नरेश खगपति, समझ पूजाफल यही।

सम्मेदगिरिकी करहु पूजा, पायहो शिवपुरमही॥

ओं ह्रीं असंख्यातमुनिसिद्धपदप्राप्तेभ्यः श्रीसम्मेदसिखरसिद्धक्षेत्रेभ्यः पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा॥ १०॥

कवित्त

परम शिखरसम्मेद सबहीको है सुख करता।

स० २०

वंदें जे नरनारि तिन्होंके अघ सब हरता ॥
नरकपशू गति टरैं सुक्ख जगके बहु पावें ।
नरपति सुरपति होंय फेरि शिवपुरको जावें ॥

दोहा ।

जे तीरथ वंदें नहीं, सुनें धर्म्म नहिं सार ।
ते भववनमें भ्रमहिंगे, कबहुं न पावें पार ॥
नरभव उत्तम पायके, श्रावककुल अवतार ।
पूजा जिनवरकी करें, ते उतरें भवपार ॥
सबाविधिजोग जु पायकें, शिखर न वंदें सार ।
रतन पदारथ पाय ते, देत समुद्रमें डार ॥

पू० २०

नं० ११ आदिनाथसर्वसिद्धवरकूट ।

ढाल कार्तिक ।

प्राणी हो आदीश्वर महाराज जी, अष्टापद शिवथान हो ।
पूजत सुर हर नर सकल, सो पावे निर्वाण हो ॥
प्राणी हम पूजत इनहीं सदा, यह नाशै भवभव भीति हो ।
प्राणी पूजौ मनवचकाय कर, ॥ १ ॥

ओं ह्रीं श्रीऋषभनाथजिनेंद्रादिमुनिसिद्धपदप्राप्तेभ्यः श्रीकैलाशगिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

नं० १५ वासुपुज्यमंदारगिरि ।

सोरठा ।

वासुपूज्य जिनराज चम्पापुरतें शिव गये ।
मनवचजोग लगाय, पूजों पदयुग अर्घले ॥ २ ॥

ओं ह्रीं वासपूज्यसिद्धपदप्राप्तेभ्यः श्रीचंपापुरसिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ २ ॥

नं० २५ नेमिनाथऊर्जयंतकूट ।

दोहा ।

नेमीश्वर तजि राजमति, लीनी दीक्षा जाय ।
सिद्ध भये गिरनारतैं, पूजों अर्घ बनाय ॥ ३ ॥

ओं ह्रीं श्रीनेमिनाथसिद्धपदप्राप्तेभ्यः श्रीगिरनारिसिद्धक्षेत्रेभ्यः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥३॥

नं० २६ महावीर ।

सुन्दरी छंद ।

वर्द्धमान जिनेश्वर पूजिये, सकलपातक दूर सु कीजिये ।
गये पावापुरतें मोक्षको, तिनहिं पूजत अर्घसंजोयके ॥ ४ ॥

ओं ह्रीं श्रीमहावीरसिद्धपदप्राप्तेभ्यः श्रीपावापुरसिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥४॥

नं० १ चौवीसगणधरप्रथमटोंक ।

दोहा ।

तीर्थंकर चौवीसके, गणनायक हैं जेह ।

तिनको पूजों अर्घ ले. मनवच धारि सनेह ॥ ५ ॥

ओं ह्रीं चतुर्विंशतिजिनगणधरचरणकमलेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ५ ॥

सिद्धक्षेत्र जे और हैं, भरत क्षेत्रके ठाहिं ।
और जे अतिशय क्षेत्र हैं, कहे जिनागममांहि ॥
तिनके नाम सु लेतही, पाप दूर हो जाय ।
ते सब पूजों अर्घ ले, भवभवमें सुखदाय ॥

ओं ह्रीं श्रीभरतक्षेत्रसम्बन्धी सिद्धक्षेत्राऽतिशयसिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घं नि० ॥ ६ ॥

सोरठा ।

द्वीप अढाईमांहि, सिद्धक्षेत्र जे और हैं ।
पूजों अर्घ चढाय, भवभवके अघनाश हैं ॥ ७ ॥

ओं ह्रीं ढाईद्वीपकेविषें विद्यमानसिद्धक्षेत्रेभ्योऽर्घं नि० ॥ ७ ॥

अडिल्ल ।

पूजों तीस चौबीस परमसुखदाय जू

भूत भविष्यत वर्त्तमान गुणगाय जू।
कहे विदेहके वीस नमों शिरनाय जू
अर्चों अर्घ बनाय सु विघन पलाय जू॥८॥

ओं ह्रीं श्रीभूतभविष्यद्वर्त्तमानसंबंधी त्रिंशच्चतुर्विंशतिजिनेंद्रेभ्यो विदेहक्षेत्रे शाश्वतविद्यमान विंशतितीर्थंकरेभ्यश्च अर्घं नि० ॥ ८ ॥

दोहा।

कृत्याकृत्रिम जे कहे, तीन लोकके माय।
ते सब पूजों अर्घ ले, हाथजोर शिरनाय॥

ओं ह्रीं श्रीतीनलोकसम्बन्धीकृत्याकृत्रिमजिनालयजिनबिंबेभ्यो अर्घं निर्व० ॥ ९ ॥

अथ जयमाल।

लोलतरंग छंद।

मनमोहन तीरथं शुभ जानो, पावनपरम सु क्षेत्र प्रमानो।

उन्नतशिखर अनूपम सोहै, देखत ताहि सुरासुर मोहै ॥ १॥

दोहा।

तीरथ परम सुहावनो, शिखरसमेद विशाल।
कहत अल्पबुधि उक्तिसों, सुखदायक जैमाल ॥

चौपई १५ मात्रा।

सिद्धक्षेत्र तीरथ सुखदाइ, वंदत पाप दूरि हुइ जाइ।
शिखरशीशपर कूट मनोज्ञ, कहे वीस अति शोभायोग्य ॥ १ ॥
प्रथम सिद्धवरकूट सुजान, अजितनाथको मुक्ति सुथान।
कूटतनो दरशन फल एह, कोटि बतीस उपास गिनेह ॥ २ ॥
दूजो धवलकूट है नाम, संभवप्रभु जहं ते शिव धाम।
दरश कोटि प्रोपधफल जान, लाख बियालिस कहो बखान ॥ ३ ॥
आनंदकूट महा सुखदाय, जहंते अभिनंदन शिवजाय।

कूटतनो दरशन इम जान, लाख उपासतनो फलभान ॥ ४ ॥
अविचलकूट महासुख वेश, मुक्ति गए जहं सुमति जिनेश ।
कूट भावधरि पूजै कोय, एक कोटि प्रोषधफल होय ॥ ५ ॥
मोहनकूट मनोहर जान, पद्मप्रभु जहंते निर्वान ।
कूटपूज फल लेहु सुजान, कोटि उपास कहो भगवान ॥ ६ ॥
मनमोहन है कूट प्रभास, मुक्ति गए जहं नाथ सुपास ।
पूजै कूट महाफल होय, कोटि बत्तीस उपास जु सोय ॥
चंद्रप्रभुके मुक्ति सु धाम, परमविशाल ललितघट नाम ।
कूटतनो दरशन फलजान, प्रोषध सोलह लाख बखान ॥ ८ ॥
सुप्रभ कूट महासुख दाय, जहतैं पुष्पदंत शिवपाय ।
पूजैं कूट महाफल लेव, कोडि उपास कहो जिनदेव ॥ ९ ॥

श्रीविद्युतवर कूट महान, मोक्षगये शीतल धार ध्यान।
पूजै त्रिविधजोग करकोय, कोडि उपासतनो फल होय॥ १०॥
संकुलकूट महा शुभ जान, श्रीश्रेयांश गये शिवथान।
कूटतनो दरसन फल सुनो, कोडि उपास जिनेश्वरभनो॥ ११
कूट सुवीर परनसुखदाय, विमल जिनेश जहां शिवपाय।
मनवच दरश करै जो कोय, कोटि उपासतनो फल होय॥ १२॥
कूट स्वयंभू सुभग सु नाम, गये अनंत अमरपुर धाम।
यही कूटको दरशन करै, कोडि उपासतनो फल धरै॥ १३॥
है सुदत्तवर कूट महान, जहंतैं धर्मनाथ निरवान।
परमविशाल कूट है सोय, कोटि उपास दरश फल होय॥ १४॥
कूट प्रभास परमशुभ कह्यो, शांतिनाथ जहंतैं शिव लह्यो।

कूट तनो दरशन है सोय, एक कोडि प्रोषधफल होय ॥ १५
परम ज्ञानधर है शुभकूट, शिवपुर कुन्थु गये अघछूट ।
जाको पूजे जो करजोडि, फल उपवास कहो इक कोडि ॥ १६॥
नाटककूट महाशुभ जान, जहंतैं शिवपुर अर भगवान ।
दरशन करै कूटको जोय, छयानव कोडि वासफल होय॥ १७ ॥
संवलकूट मल्लि जिनराज, जहंतैं मोक्ष भये शुभकाज ।
कोडिदरशफल कहो जिनेश, कोडि एक प्रोषध शुभ वेश ॥ १८ ॥
निर्जरकूट कहो सुखदाय, मुनिसुव्रत जहंतैं शिव जाय ।
कूटतनो अब दरशन सोय, एक कोडि प्रोषधफल होय॥ १९ ॥
कूट मित्रधरतैं नमि मुक्त, पूजत पांय सुरासुर युक्त ।
कूटतनो फल है सुखकन्द, कोटि उप.स कहो जिनचंद ॥ २० ॥

श्रीप्रभु पार्श्वनाथ जिनराज, चहुंगतिसे छूटे महाराज ।
सुवरणभद्र कूटको नाम, तासों मोक्ष गये सुखधाम ॥ २१ ॥
तीन लोक हितकरण अनूप, वंदत ताहि सुरासुर भूप ।
चिंतामणि सुरवृक्ष समान, ऋद्धि सिद्धि मंगलसुखदान ॥ २२ ।
नवनिधि चित्रावेलि समान, जातैं सुक्ख अनूपम जान ।
पारस और कामसुरधेन, नानाविध आनंदको देन ॥ २७ ॥
व्याधिविकार जाहिं सब भाज, मनचीते पूरे होंय काज ।
भवदधिरोग विनाशकसोय, औषधिजगमें और न कोय ॥ २४॥
निरमल परम थान उत्कृष्ट, वंदत पाप भजें अरु दुष्ट ।
जो नर ध्यावतपुण्य कमाय, जस गावत सब कर्म नशाय ॥२५॥
कटें अनादिकालके पाप, भजें सकल छिनमें संताप ।

नरपति इंद्र फणेंद्र जु सेवे, और खगेंद्र मृगेंद्र जु नवै ॥२६॥
नित सुर सुरी करैं उचार, नाचत गावत विविधप्रकार ।
बहुविधि भक्ति करैं मनलाय, विविधप्रकार बादित्रबजाय॥२७॥
द्रम द्रम द्रमता बजे मृदंग , घन घन घंट बजे मुहचंग ।
झुनझुन झुनझुन झुनिया झुनें, सर सर सर सारंगी धुने ॥२८॥
मुरली बीन बजे धुनि मिष्ट,पटहा तूर सुरान्वित पुष्ट ।
सब सुरगण श्रुति गावत सार, सुरगण नाचत बहुत प्रकार॥२९॥
झन नन नन ना नूपुर बान,तन नन नन ना तोरत तान ।
ता थिइ थिइ थिइ थिंई चाल, सुर नाचत नावत निजसुभाल ॥
नाचत गावत नाना रंग, लेत जहां सुर आनंद संग ।
नितप्रति सुरजहं वंदत जाय, नानाविध के मंगल गाय ॥ ३१ ॥

अनहदधुनिकी मोद जू होय, प्रापति वृष की अतिहां होय ।
तातैं हमको सुख दे सोय, गिरिवर वंदों करधरि दोय ॥३२
मारुत मंद सुगंध चलेय, गन्धोदक जहं नित वर्षेय ।
जियकी जाति विरोध न होय, गिरिवर वंदों करधरि दोय ३३
ज्ञान चरन तप साधन सोय, निजअनुभवको ध्यान जु होय ।
शिवमंदिरको द्वारो सोय, गिरिवर वंदे करधरि दोय ॥ ३४ ॥
जो भवि वंदे एक हि वार, नरक निगोद पशू गति टार ।
सुर शिवपदको पावै सोय, गिरिवर वंदों करधरि दोय ॥ ३५ ॥
जाकी महिमा अगम अपार, गणधर कहत न पावैं पार ।
तुच्छबुद्धि मैं मति कर हीन, कही भक्तिवश केवल लीन ॥३६॥

घत्ता छन्द ।

श्रीसिखरवेतं अति सुखदेतं, शीघ्रहि भवदधि पार करं ।

अरिकर्मविनाशन [illegible] [illegible], जय गिरिवर जगतारवरं ॥२७॥

ओं ह्रीं श्रीसम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्रेभ्यो पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

दोहा ।

शिखर सु पूजैं जो सदा, मन वचन चित लाय ।
दास जवाहर यों कही, सो शिवपुरको जाय ॥

इत्याशीर्वादः ।

इति श्रीसम्मेदशिखर पूजा समाप्ता ।

कवि परिचय ।

अडिल्ल ।

पिता सु मोतीलाल "जवाहर" के कहे । काका हीरालाल गुणन पूरे लहे ।
मारू सूरी गोत जु मारिल जानिये, शरण जिनेश्वर धर्म यही उर आनिये ॥ १ ॥

दोहा ।

यश के लहने ना कही, कही धर्म के काज ।
श्रीजिनवर की भक्ति से, मिलिहै सुक्ख समाज ॥ २ ॥

करम तुम चूरण कर डारे, जय शिवकामिनिकन्त जिनेश्वर सबहीके प्यारे ॥
प्रभू तुम अगणित बलधारी, अतुलअनन्तचतुष्टयधारक सबको सुखकारी ॥
प्रभू तुम तपलक्ष्मी धरता, धरमधुरंधर धीर जिनेश्वर स्वर्गमुक्ति करता ।
प्रभू तुम रत्नत्रयधारी, तारणतरण जिनेश्वर स्वामी सबको हितकारी ॥
प्रभू तुम संशयमदहारी, निर्विकार निर्दोष जिनेश्वर गुणअनन्तधारी ।
प्रभू तुम कामसुभटविजई, धर संयम क्षत्रपाल जिनेश्वर चारितदलसजई ॥
प्रभू तुम मोहमहामारो, क्रोधमानमायाको त्यागो शिवपदको धारो ।
प्रभू गुणसागर है भारी, ज्ञानजिहाज बैठके गणधर पहुंचे नहिं पारी ॥
प्रभू गुणकीरति बेलि बढी, यतन बिना जगमंडपऊपर आपुहितें जु चढी ।
कुदेव यश अब जो नित चाहैं, पै अपने घरहीके भीतर यशको नहिं लाहैं ॥
प्रभू तुम सबको सुखदाई, जन्मजन्मके पाप कटत हैं तुमरे गुणगाई ।
जगतमें बहु पदार्थ जानो, सुरतरु चिंतामणि पारस हैं नवनिधिको मानो ॥
अरे इक भव जानो भाई, जे नियोग ये जियको होई किंचित सुखदाई ॥
करैं जे प्रभुचरणन की सेवा, जनम जनम सुखदायक प्रभुजी तुमही हो देवा ॥

पू० २७

तुमही हो कृपानाथ स्वामी, तुम बांधव जगतात दयानिधि अन्तरके जामी ।
प्रभु तुम सब सुखकेदाता, जगजीवनको पार लगावत-देते सुखमाता ॥
प्रभू तुम गुणरत्नखाना, तुम पुनीत समदर्शी प्रभुजी तुम्ही सब जाना ॥
प्रभू बिन तीनकालमाही, नहिं नहिं शरण जीवको कोई या जगके माहीं ॥
प्रभू तुम करुणानिधि नाथा, तुमसनमुख हम ठढे निशिदिन जोरे जुगहाथा ॥
होय नहिं जबलों निरवाना, जगनिवास छूटै अब नाहीं दुखको जो दाना ॥
प्रभू तुम चरणांबुजवासा, भवभव मिलै करत या अरजी है 'जवार' दासा ।
और नहि मांगत प्रभु तुमसों, है दयाल दीजै वरदाना खुसी होय हमसों ॥

दोहा ।

त्रिभुवनपति अरजी सुनो, कृपानाथ गुणखान ।
भवसागरतैं काढियें, शिवपद दे भगवान ॥ १ ॥

अडिल्ल ।

अथ वैशाख बदी नवमी शुभ जानियें । शुक्र वार के दिना समापत मानिये ॥
इक वसु नव को अंक एक अब फिर लिखो । संवत यही प्रमाण सरस मनमें लखो ॥

दोहा।

जे नर नारी भावसों, पूजैं श्रीजिनदेव।
नाना विध सुखभोगके, पावे शिव स्वयमेव ॥ ३ ॥
तिहं को इक दृष्टांत हैं, सुनो भव्य जन लोय।
श्रद्धातैं पूजा करैं, रत्न समान जु होय ॥ ४ ॥
बिन श्रद्धा पूजा करे, कांच समान सु जान।
रतन बडो है मोलको, अमोलो कांच समान ॥ ५ ॥
बहुत करी तो क्या भई, भाव न मनमें लाय।
श्रद्धा से थोरी करै, पावै पद सुख दाय ॥ ६ ॥
श्रद्धासे थोरी करो, लेहु बहुत कर मान ॥
प्रापति होवै पुण्य की, पावै पद निरवान ॥ ७ ॥
तुच्छ बुद्धि मेरी सही, पंडित करो विचार।
भूल चूक अब होय जो, लीज्यो चतुर सुधार ॥ ८ ॥

॥ समाप्त ॥

सर्व प्रकारके जैनग्रंथोंके मिलनेका पता—

जैनग्रंथप्रभाकर कार्यालय,

९।२ महेन्द्रबोसलेन, श्यामबाजार,

कलकत्ता।